स्वतंत्रता और स्वच्छन्दता

–मुरलीधर दुबे

मनुष्य वैसे तो जन्म से स्वतंत्र है परन्तु हर समाज में वह विभिन्न बंधनों से जकड़ा हुआ है। पृथ्वी पर मानव जीवन के उद्‌भव के साथ समय–समय पर धरती के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न सभ्यताओं का उदय हुआ। सुमेरियन सभ्यता, मिश्र की सभ्यता, सिंधु नदी की घाटी की सभ्यता, ग्रीक (यूनानी) सभ्यता, पर्सियन सभ्यता, रोमन सभ्यता, माया सभ्यता आदि कुछ विशेष उल्लेखनीय है। ईसा पूर्व हजारों साल पहले पहिया एवं धातु का अविष्कार ने मानव को सर्वाधिक कियाशील व उद्यमी बनाया। भारत वर्ष में सोलह महाजनपदों की सभ्यताओं के साथ ऋग्वेदिक काल, रामायण काल, महाभारत काल आदि में चारों वेद, अरण्यक, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंन्थों आदि सनातन धर्म के विभिन्न ग्रंथों की रचना, मनुष्य के जीवन व उसके समाज को नियंत्रित करने के लिए हुई जो आज भी काजलयी है। धरती पर जीवन कैसे आया, और किसी ग्रह, उपग्रह पर जीवन क्यों नहीं विकसित हो पाया, ब्रह्मांड क्या है इसकी उत्पत्ति कैसे हुई, इसकी क्या सीमा है आदि प्रश्न आज भी मानव को जिज्ञासु बनाये हुए हैं और निरन्तर शोध कार्य हो रहे हैं। स्वयं मनुष्य का जीवन क्या है, मरने के उपरान्त इसका क्या होता है, मनुष्य के जीवन की दशा–दिशा कैसे एवं किसके द्वारा नियंत्रित होती है, आत्मा क्या है, क्या वह शाश्वत, अविनाशशील अदहनीय है, क्या मनुष्य के एक जीवन के कर्म उसके साथ मोबाइल के "सिम कार्ड" की "मेमोरी" की भांति दूसरे जन्म को "ट्रांसफर" होते हैं अथवा मनुष्य के शरीर के विनाश के साथ वह भी समाप्त हो जाती है आदि अनेक

प्रश्न हमेशा से मानव को उद्वेलित करते रहे है। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर की खोज ने धरती पर अनेक धर्मों का उदय किया। सनातन धर्म, बौद्धधर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म, ईस्लाम धर्म आदि धर्मों का उदय धरती के विभिन्न हिस्सों में वहां की काल परिस्थिति के अनुरूप हुआ। इन धर्मों के उदय के साथ–साथ समाज को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न राज्य व्यवस्थाओं का भी उदय धरती के विभिन्न हिस्सों में वहां के काल – परिस्थिति के अनुरूप हुआ। मनुष्य की महत्वाकांक्षा ने राज्य/ देशों की उत्पत्ति किया और कालांतर में उसमें अनेक समय अंतराल पर छोटी बड़ी टकराहट हुई। राज्यों में युद्ध हुआ, विश्व युद्ध हुए और इन सब टकराहटों के मध्य आज का मानव समाज अपनी – अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के साथ अपने – अपने देश की व्यवस्थाओं का संचालन कर रहे हैं। सत्रहवीं, अट्ठारहवीं सदी में विज्ञान की कुछ खोजों यथा स्टीम इंजन, विद्युत आदि के बाद मानव और क्रियाशील, "मोबाइल" एवं महत्वाकांक्षी हो गया। कालांतर में विज्ञान की प्रगति ने मनुष्य को आज इस युग में ला दिया जहां मानव जीवन पहले की अपेक्षा अत्यधिक आरामदायी, सुविधा सम्पन्न हो चुका है। रोगों के निदान की उसकी खोज एक गौरवमयी स्थिति में आ गयी है। रहन–सहन सुविधा भोगी, सुविधा सम्पन्न हो चुका है। आवागमन के साधन निरंतर और आरामदेह, कम समय लेने वाले द्रुतगामी होते जा रहे हैं। कम्प्यूटर के आविष्कार ने दुनिया को एक ग्राम में बदल दिया है और इण्टरनेट की सुविधा ने तो दुनिया मुट्ठी में कर दिया है। इसके साथ ही विज्ञान ने दूसरी दिशा में अत्यन्त विनाशशील हथियारों की भी वृद्धि की है। एटम बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रान बम, अंतर महाद्वीपीय मिसाइलों ने दुनिया को एक ऐसे मोड़

पर ला दिया है जहां चन्द सिरफिरे राजनेता मानव सभ्यता व संस्कृति को थोड़े समय में छिन्न–भिन्न एवं ध्वस्त कर सकते हैं।

यह ईश्वर की कृपा है कि इस समस्त ब्रह्मांड में, अभी तक ज्ञात खोजों तक, केवल हमारी धरती पर ही मानव जीवन है। सूर्य से निकली धरती अरबों वर्षों तक गरम गोले से एक जीवन योग्य स्थल में परिवर्तित हो सकी। धरती पर जीवन का मूल जल यहां आया। जलीय जीव, जंगल, जंगलीय जीवों की उत्पत्ति के साथ हजारों वर्ष पूर्व मानव जीवन धरती पर विकसित हुआ। प्रारम्भिक जनजातीय जीवन पद्वति से ग्रामीण एवं शहरी जीवन पद्वति धरती के अनेक हिस्सों में पिछले पांच हजार वर्षों में विकसित हुई। ईसा पूर्व के वर्षों में जहां पहिया, धातु, खेती करने के तरीके, लिखावट, बारूद आदि विकसित हुए तो वहीं विभिन्न धर्म एवं दर्शन भी विकसित हुए। राज्यों के उदय हुए और प्रारम्भ में राज्य धर्म से ही अनुशासित एवं निर्देशित थे। ईसा बाद के वर्षों में स्टीम इंजन, बिजली, आटोमोबाइल, कम्प्यूटर आदि के आविष्कारों ने विज्ञान की मानव की सोच एवं जिज्ञासा को आज चरम पर पहुंचा दिया है। जो कुछ वर्ष पूर्व तक कल्पना की चीज थी वह साकार होती जा रही है।

ईसा पूर्व के सत्रहवीं/ अट्ठारहवीं शताब्दी में यूरोप के देशों में पुनर्जागरण (Renaissance) काल शुरू हुआ, इसमें सामाजिक व्यवस्था के साथ–साथ प्रकृति की घटनाओं पर भी अन्वेषण (Inquiry) का आलोचनात्मक/ दोषदर्शी (Critical) प्रवृत्ति (Spirit) विकसित हुई। इसने वहां के देशों में एक प्रतियोगितात्मक स्पर्धा को जन्म दिया। इससे न केवल न्यूटन, गैलीलियो,

आइन्सटीन जैसे वैज्ञानिक अस्तित्व में आये बल्कि धर्म नियंत्रित राज्य व्यवस्था को चुनौती देने वाली सोच के विचारक जैसे वोल्टेयर, मांटेस्क्यू, रूसो, हाब्स, लॉक, मार्क्स आदि भी उत्पन्न हुए जिन्होंने यूरोपीय देशों की शासन प्रणाली एवं सामाजिक जीवन को पूरी तरह बदल दिया। फ्रांस की क्रांति, इंग्लैण्ड में शासन प्रणाली का बदलाव, रूस में कम्युनिस्ट पार्टी का उदय हुआ। औद्योगिक क्रान्ति का उदय हुआ। वैचारिक क्रांति के इस युग में मानव की व्यक्तिगत स्वतंत्रता (liberty) को प्रधानता दिया। यद्यपि विज्ञान की प्रगति ने इन देशों में एक औपनिवेशिक प्रवृत्ति भी विकसित किया परन्तु आजादी की मानव की चाह ने धीरे–धीरे दासता की बेड़ियों को तोड़ दिया और कई देश औपनिवेशिक नियंत्रण से बाहर आये। अमेरिका का उदय, यूरोप के देशों में प्रजातांत्रिक व्यवस्था, रूस व चीन में कम्युनिस्ट शासन की व्यवस्था का उदय हुआ और राजाओं का शासन समाप्त हुआ। भारत वर्ष में भी ब्रिटिश शासन के समाप्ति के साथ राजाओं के शासन का अंत हुआ। यद्यपि कुछ देशों में अभी धर्म नियंत्रित राज्य व्यवस्था अथवा तानाशाही व्यवस्था है, परन्तु वहां की जनता भी अपनी आजादी (liberty) के लिए संघर्ष करती रहती है।

कम्युनिस्ट शासन प्रणाली के राज्य का नियंत्रण प्रभावी रहता है और व्यक्ति की स्वतंत्रता कुछ सीमा तक ही स्वीकार्य है, परन्तु प्रजातांत्रिक व्यवस्था में व्यक्ति की स्वतंत्रता ही प्रमुख रहती है। राज्य एक उपयुक्त (Reasonable) नियंत्रण (restrictions) ही रखता है। व्यक्ति स्वतंत्रता की आड़ में स्वच्छन्द होने का प्रयास करता रहता है। जब वह एक अनुमन्य सीमा से परे जाने लगता है तो कानून अपना कार्य प्रारम्भ करता है। यह द्वन्द न केवल मनुष्य मात्र के जीवन में ही

चलता है बल्कि समाज एवं राष्ट्र/राज्य या कभी–कभी एक जाति/धर्म विशेष के लोग भी ऐसे द्वन्द से प्रभावित होते हैं। कभी–कभी ऐसे समाज/ जाति/ धर्म के लोग इसे आजादी की लड़ाई मानते हैं, वहीं इसके विपरीत सम्बन्धित राज्य व्यवस्था इसे आन्दोलन/ राष्ट्रद्रोह का नाम देती है। समाज एक परिवर्तनशील इकाई है कभी भी कोई एक व्यवस्था चिरस्थायी रूप से कही नहीं हो सकती, उसमें परिवर्तन के प्रयास के दौर आते रहते हैं। इसी संघर्ष में एक गतिमान संतुलन बना रहता है। यदि आन्दोलन, उथल पुथल का दौर लम्बे समय तक चलता है तो वह समाज/ राज्य एक अस्त–व्यस्त (Chaotic) समाज बन जाता है, जहां अशान्ति रहती है और वहां का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक विकास प्रभावित होता है।

हमारा देश भारत वर्ष एक प्रजातांत्रिक देश है। 15 अगस्त, 1947 से पहले यहां लगभग 500 रियासतें थीं और अंग्रेजों का शासन था। देश के सभी जाति, धर्मों के लोगों ने अंग्रेजों के विरूद्ध आजादी की लड़ाई लड़ी और देश स्वतंत्र हुआ। उस समय यद्यपि यूरोप के औद्योगिक कांति के विकास के आविष्कारों ने भारत को भी रेल लाइन, टेलीग्राफ, रेडियो आदि जैसे संसाधनों से लाभान्वित किया था, परन्तु यहां की सामाजिक दशा, गरीबी एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। आजादी के इन सालों में सभी सरकारों ने सामाजिक विसंगतियों एवं गरीबी को दूर करने का अपने– अपने ढंग से प्रयास किया है। वर्ष 1947 की तुलना में हम काफी विकसित भी हुए हैं, परन्तु वास्तविक लक्ष्य से अभी हम बहुत दूर हैं। विकास एक सतत एवं तुलनात्मक प्रकिया है इसमें ठहराव नहीं है। जीवन के हर क्षेत्र में हमने विकास किया है, जीवन जीने के साधन सर्वसुलभ होते जा रहे हैं। यातायात, आराम की वस्तुएं, जीवन रक्षक मेडिकल संसाधन आदि की सुविधायें अन्य विकसित देशों की

भांति यहां भी सुलभ होती जा रही हैं, परन्तु दूसरी तरफ यह भी कहा जाता है कि जीवन मूल्यों में गिरावट आयी है, मनुष्य का मनुष्य के प्रति बरताव अमानवीय होता जा रहा है, पारिवारिक जीवन में अपेक्षाकृत अधिक बिखराव आ रहा है, समाज के हर क्षेत्र में अस्त–व्यस्तता दिखायी देती है, हम मात्र उपभोक्ता बाजार होते जा रहे हैं, आदि–आदि। इसी परिप्रेक्ष्य में यह एक चिंतन का विषय है कि कहीं हमारी स्वतंत्रता हमें स्वच्छन्दता की ओर ढकेलने का प्रयास तो नहीं कर रही है। इसका जीवन के हर क्षेत्र में प्रभाव क्यों बढ़ता जा रहा है, इसके लिए दोषी कौन है और क्या कोई उपाय भी सम्भव है अथवा हम एक विघटनकारी समाज की ओर बढ़ते नजर आ रहे हैं और वर्तमान पीढ़ी "मुट्ठी में रेत" की भांति पकड़ने की पुरजोर कोशिश के बाद भी उसे पकड़ने में कामयाब नहीं हो पा रही है।

स्वतंत्रता पूर्व यह देश विभिन्न रियासतों में बटा होने के बावजूद भी सांस्कृतिक रूप से एक था। स्वतंत्रता के आन्दोलन ने बहुत कुछ राष्ट्र प्रेम एवं राष्ट्रीयता के विकास के साथ एक राष्ट्रीय चरित्र का भी निर्माण किया। यह राष्ट्रीय चरित्र स्वतंत्रता प्राप्ति के कई वर्षों तक समाज पर प्रभावकारी रहा परन्तु धीरे–धीरे यह क्षीण होता जा रहा है। हम इस प्रभाव को जीवन के हर क्षेत्र में देख सकते हैं। सामाजिक संरचना, इसका विकास, विभिन्न समय व काल का इस पर पड़ने वाला प्रभाव, इसमें होने वाला परिवर्तन, मूल्यों में परिवर्तन और फिर इसका आने वाली पीढ़ियों पर प्रभाव एक गूढ़ विषय है जिस पर एक समाजशास्त्री, एक मनोवैज्ञानिक, एक दार्शनिक, एक प्रगतिशील विचारक, एक राजनीतिज्ञ, एक लेखक अपने–अपने दृष्टिकोण से देखने एवं व्याख्या कर सकते हैं। परन्तु यहां हम एक सामान्य व्यक्ति के दृष्टिकोण से जीवन के विभिन्न पहलुओं पर, समय के साथ विकास एवं

सामाजिक परिवर्तनों का राष्ट्रीय चरित्र पर प्रभाव का विश्लेषण करेगें। यह विश्लेषण वैसे तो अनेक क्षेत्रों में किया जा सकता है परन्तु विशेष तौर पर हम राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक जीवन पर प्रभाव का विश्लेषण करेगें। यद्यपि इनमें से कोई भी क्षेत्र अपने आप में स्वतंत्र नहीं है, सभी एक दूसरे को प्रभावित करते हैं फिर भी सुविधा की दृष्टिकोण से इन्हें अलग–अलग लेना उचित होगा।

कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यदि किसी एक क्षेत्र में देश में सबसे तेजी से तरक्की हुई है तो वह है ''राजनीतिक चेतना''। पहले राजनीति कुछ चंद लोगों के परिवारों तक सीमित थी, परन्तु इसका विस्तार लोक सभा, विधान सभा चुनाव के साथ–साथ जिला पंचायत, क्षेत्र पंचायत, ग्राम पंचायत एवं नगरीय क्षेत्रों में नगर निगम, नगर पालिका एवं टाउन एरिया (नगर पंचायत) तक खूब महसूस की जा सकती है। प्रायः साल के प्रत्येक दिनों में कहीं न कहीं चुनाव होते रहते हैं अथवा तैयारी होती रहती है। देश के आम नागरिक के सामान्य अभिरूचि का यह महत्वपूर्ण विषय बन गया है। देश का अधिकांश नौजवान इस क्षेत्र में अपना भाग्य आजमाना चाहता है अथवा योगदान देना चाहता है, परन्तु यह बात भी स्वीकारी जाती है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के नेताओं का राजनीति में जो जज्बा व उद्देश्य सामाजिक विकास का था वह अब कहीं न कहीं इसकी आड़ में स्वयं के विकास तक अधिक सीमित होता जा रहा है। राष्ट्रीय चरित्र में इस गिरावट को पुरानी पीढ़ी खूब महसूस करती है और प्रकट भी करती है परन्तु हमारी राष्ट्रीय मुख्य धारा कदाचित इसे अनसुनी ही कर रही है। यह गिरावट कब और कहां से और क्यों प्रारम्भ हुई इसका कुछ विश्लेषण किया जा सकता है।

चूंकि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त देश के सामने भयंकर गरीबी एवं संसाधनों के अभाव की चुनौती थी, नेहरू माडल ऑफ डेवलपमेन्ट में पंचवर्षीय योजनाओं के साथ औद्योगिक विकास, बड़े–बड़े बांधों का निर्माण, सिंचाई परियोजनाओं व विद्युत परियोजनाओं का विकास, देश में शिक्षा में एक "वैज्ञानिक सोच" (Scientific Morale) के विकास आदि पर जोर दिया गया। राज्य का नियंत्रण "कोटा–परमिट" के माध्यम से था और पूंजीवाद का विकास नियंत्रित तरीके से हो रहा था। यह माडल लगभग इन्दिरा गांधी जी के समय तक था। अन्तर्राष्ट्रीय दबाव, देश में बदलते राजनीतिक चेतना के समीकरण, मंडल कमीशन का लागू होना, बढ़ती बेरोजगारी ने स्व0 नरसिम्हाराव जी को 1991 में आर्थिक उदारीकरण की नीति को लागू करने को विवश किया। यह L.P.G. (Liberalization, Privatization, Globalization) के नाम से जानी जाती है। इस नीति के उपरांत देश में आर्थिक विकास दर में वृद्धि हुई, विदेशी कंपनियों के लिए बाजार खुल गया। उपभोक्ता वस्तुओं यथा टेलीविजन, मोबाइल, कम्प्यूटर, कारें, फ्रिज, ए0सी0 आदि की मांग बढ़ी और जन सामान्य भी इन वस्तुओं को प्राप्त करने के होड़ में लग गया। "रीयल स्टेट" का तेजी से विकास हुआ, "मॉल" एवं "फ्लैट्स" का निर्माण होना प्रारम्भ हुआ। मेडिकल सुविधाएं भी जो अब तक विदेशों में उपलब्ध थी यथा पेस मेकर लगाना, स्टेंट लगाना, लीवर, हृदय, किडनी ट्रान्सप्लांट आदि देश में उपलब्ध होने लगे, परन्तु यह महंगे थे। आमजन में इन सभी को येन–केन–प्रकारेण प्राप्त करने की ललक बढ़ी। नेताओं ने भी इसे और तेजी से प्राप्त करने एवं अपने प्रभाव में इसे रखने का प्रयास किया। इन सबका परिणाम हुआ कि राष्ट्रीय चरित्र कहीं न कहीं धराशायी होता गया और शनैः शनैः

हमने अपनी पुरानी संस्कृति के सार्वभौमिक सिद्धान्तों कि "चोरी करना पाप है", "दूसरों को दुख देना पाप है", "ईमानदारी से कमाई के अतिरिक्त प्राप्त धन पाप है", "हमारे कर्मों का फल हमें अगले जन्म में भुगतना पड़ेगा", परमात्मा अपने सर्वत्र व्याप्त सी0सी0 कैमरा से हमारे कर्मों की रिकार्डिंग हमारी सूक्ष्म आत्मा के "सिम" में डाल रहा है जिसका हमें अगले जन्म में उत्तर देना होगा", "अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य से दैहिक सम्बन्ध पाप है" आदि धारणाएं बदलती गयी और बदलती जा रही हैं। समाज में "सब चलता है" की धारणा बलवती होती जा रही है।

भारतीय जीवन का एक अहम् हिस्सा यहां के लोगों में अध्यात्मिक चेतना रही है। यहां की सांस्कृतिक धरोहर में त्याग व तपस्या मूल तत्व रहा है। आध्यात्मिकता का अभाव एवं भौतिकता में वृद्धि अब हमारे सामाजिक जीवन में प्रवेश कर गया है। इसका गतिमान संतुलन बिगड़ने से समाज में भौतिक वृद्धि के उपरांत भी अनेक विकृतियां उत्पन्न होती जा रही हैं।

भारत वर्ष की सामाजिक व्यवस्था किसी एक व्यक्ति अथवा समाज की देन नहीं है। समय–समय पर यहां हुए राजनीतिक परिवर्तनों का समाज पर प्रभाव पड़ा। ईसा पूर्व से बाद के वर्षों में गुप्तकाल तक गणित, ज्योतिष, ललितकला, संगीत, साहित्य आदि क्षेत्रों में विकास हुआ। बारहवीं सदी के अंत से सत्रहवीं सदी के अंत तक मुस्लिम शासकों का स्थापत्य कला, शासन तंत्र का विकास आदि प्रमुख योगदान रहे। इसके उपरान्त ब्रिटिश शासकों की शासन प्रणाली, विज्ञान की प्रगति का विस्तार, कानून बनाकर शासन करने की प्रणाली आदि विशेष उल्लेखनीय रही। आज का भारत का स्वरूप 1947 के पूर्व कभी इस तरह एकीकृत नहीं था। मौर्य काल में कुछ हद तक सीमा इस तरह की कही जा सकती है। परन्तु कुछ कम,

कुछ अधिक। इस प्रकार 1947 के बाद के भारत के विकास की चुनौती पूर्ववर्ती कालों से भिन्न रही। एक तरफ हमारी स्वतंत्रता थी, दूसरी तरफ सामाजिक बेड़ियों से मुक्त होने का उतावलापन, तेजी से भौतिक विकास की व्यग्रता, जीवन दशा सुधारने का प्रयास। इससे समाज में स्वच्छन्दता का भी विकास हुआ। आज इसी स्वतंत्रता एवं स्वच्छन्दता के बीच यहां का शासन तंत्र, राजनीतिक व्यवस्था द्वन्द से जूझ रही है। विभिन्न संस्कृतियों के समागम ने यहां के सामाजिक जीवन में "अनेकता" उत्पन्न की।

कुछ हद तक स्वतंत्रता के साथ स्वच्छन्दता का आना स्वाभाविक है, परन्तु जब यह किसी भी परिवार, समाज या राष्ट्र के जीवन में अधिक प्रभावी होने लगता है तो वहीं से विघटन के बीज उगने लगते हैं। विकास की दर प्रभावित होती है। हर व्यक्ति कहीं न कहीं से प्रभावित होता है, हर पीढ़ी अपने पूर्व की पीढ़ी को दोषी ठहराती है। यह सही है कि 1947 के बाद देश में अत्यधिक विकास हुआ है। ग्रामीण जीवन, शहरी जीवन, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, सड़क, बिजली, पानी, आवास, संसाधनों एवं अवसरों का विकास आदि सभी क्षेत्रों में विकास एवं परिवर्तन परिलक्षित होता है, परन्तु हम एक राष्ट्र समाज व राष्ट्रीय चरित्र विकसित करने में कामयाब नहीं हो सके हैं। राष्ट्र – समाज धर्म, जाति, क्षेत्र विशेष के संकीर्ण भावनाओं को तिरोहित करने में कामयाब नहीं रहा है, बल्कि राजनीतिक लाभ के लिए आग में और घी डालने का कार्य हो रहा है, जो चिंताजनक है। विकास का आधार घृणा, द्वेष, विभाजन यदि बनाया जायेगा तो यह कभी भी स्थायी नहीं रहेगा, बल्कि एक दिन भस्मासुर बनकर स्वयं को निगलने का प्रयास करेगा। यह एक अच्छी बात अब तक इस देश में रही है कि धर्म एवं जाति की राजनीति की भावना

व दृष्टिकोण ने राष्ट्रीय मान्यता कभी नहीं दी, बल्कि यह क्षेत्रीय क्षत्रपों तक ही सीमित रही, परन्तु इसका विस्तार यदि नहीं रोका गया तो देश के लिए यह घातक हो सकता है। छोटी–छोटी बातों पर साम्प्रदायिक दंगें होना, एक दूसरे के राजनीतिक प्रतिद्वंदियों की हत्या कराना, समाज में बढ़ती हिंसा, बलात्कार, अपहरण, फिरौती, अशांति हमारी धार्मिक, जातिगत व व्यक्तिगत स्वच्छन्दता एवं कटुता का ही प्रभाव है। इसमें शासन व प्रशासन तंत्र का महत्वपूर्ण समय, श्रम, धन नियंत्रण में ही व्यर्थ जाता है और विकास दर प्रभावित होती है।

भारत वर्ष अनेकता में एकता का देश है, परन्तु आजादी के इतने सालों में एकता का कार्य और सुदृढ़ करने के बजाय समाज में स्वच्छन्दता, अनुशासनहीनता, तात्कालिक राजनैतिक लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्ति बलवती हो रही है। धार्मिक त्योहारों का आयोजन एक सांस्कृतिक परम्परा से अधिक कहीं प्रदर्शन एवं दूसरों को नीचा दिखाने के भाव ने ले लिया है। लाउड स्पीकरों का प्रयोग आवश्यकता से अधिक शोर मचाने में होने लगा है। सड़कों पर हार्न का शोर, अस्त व्यस्त ट्रैफिक, जाम, प्रदूषण, अब देश के हर शहर में आम बात हो गयी है। आबादी में वृद्धि एवं बढ़ते संसाधनों ने आम आदमी के स्वास्थ्य व जीवन को प्रभावित किया है। हम धार्मिक आयोजनों में अपना उतना आध्यात्मिक विकास नहीं करते जितना कि दूसरों को विभिन्न प्रकार से असुविधा पहुंचाकर करते हैं। कदाचित स्व अनुशासन के भाव ने स्वच्छन्दता का रूप ले लिया है। इससे सबसे अधिक प्रभावित बीमार, वृद्ध, बच्चे एवं पठन पाठन करने वाले छात्र एवं चिंतनशील व्यक्ति होते हैं। पुलिस कहां तक समाज के हर व्यक्ति पर अंकुश लगाये एवं समाज में व्यवस्था कायम रखे। उनकी भी अपनी सीमा एवं वरीयतायें हैं। शांति

व्यवस्था, अपराध नियंत्रण, वी0आई0पी0 ड्यूटी, अन्य आकस्मिक कार्य उनकीं प्राथमिकता में होते हैं।

भारत वर्ष 125 करोड़ की आबादी के साथ विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है। यहां युवा जनसंख्या भी अधिक है। अमेरिका विश्व का सबसे पुराना प्रजातंत्र है जो 1776 में स्वतंत्र हुआ। वहां की आबादी लगभग 35 करोड़ है वहाँ की राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्था इतनी सुदृढ़ है कि हमारे यहां के सभी युवा इंजीनियर, डाक्टर, छात्र, वैज्ञानिक वहां जाने की उत्कट इच्छा रखते हैं और वहां जाने के बाद वहीं बस जाने की प्रवृत्ति रखते हैं। H-1B वीजा के आधार पर जाने वाले युवा ग्रीन कार्ड पाने की ललक रखते हैं। स्मरण रहे अमेरिका जाने वाले युवा इस देश के असामान्य बुद्धि के लोग होते हैं, जो वहां की व्यवस्था, विकास में अपना अमूल्य योगदान देते हैं। वहां की शासन व्यवस्था उनकी प्रतिभा का भरपूर उपयोग करती है। कई वैज्ञानिक वहां जाने के बाद नोबुल पुरस्कार प्राप्त करते हैं। उन्होंने अपनी शासन व्यवस्था ऐसी विकसित कर रखी है कि भारत ही नहीं बल्कि विश्व का हर बुद्धिमान युवा उनके यहां खिंचा चला जाता है। वे इसका स्वागत भी करते हैं। पचास–साठ के दशक में फिजिक्स, केमिस्ट्री, गणित, आदि विज्ञान पढ़ने वाले युवा वहां गये और वहीं के बस कर रह गये। बाद के दशकों में साफ्टवेयर इंजीनियर सेवा प्रदाता कम्पनियों के माध्यम से जाने लगे। आज भी युवा इंजीनियरों का सपना अमेरिका जाना ही रहता है। वहां का सामाजिक जीवन उन्हें आत्मसात करता है और हमारे देश की अस्त–व्यस्तता के विपरीत वहां का जीवन उन्हें सहज एवं सरल प्रतीत होता है। आम जीवन की यहां की परेशानियां वहां प्रतीत नहीं होती। शांति व्यवस्था, सुरक्षा, शिक्षा, कमबद्ध जीवन शैली, राजनैतिक हस्तक्षेप का

अभाव, समय का महत्व, कुछ और बेहतर करने का वातावरण एवं प्रोत्साहन उन्हें अधिक आकर्षित करता है, जो अभी हमारे समाज में विकसित नहीं हो सका है। हम उधर प्रयत्नशील हैं परन्तु पूर्णता अभी हमसे बहुत दूर है। चिंता की बात यह है कि हम अपने समाज में उक्त व्यवस्थाओं को स्थापित करने का प्रयास भी उतनी तत्परता एवं दृढ़ निश्चय के साथ नहीं कर पा रहे हैं। सांप सीढ़ी के खेल की भांति कुछ कदम आगे बढ़ते हैं और फिर नीचे आ जाते हैं। शायद यही कारण है कि 125 करोड़ की आबादी के इस देश में जितने उच्च स्तरीय वैज्ञानिक, लेखक, बुद्धिजीवी, इंजीनियर, डाक्टर, खिलाड़ी, अर्थशास्त्री आदि विकसित होने चाहिए उतने हम नहीं कर पा रहे हैं। हमारा राजनीतिक जीवन धर्म, जाति, क्षेत्र विशेष के सीमित सोच से ऊपर नहीं उठ पा रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के राजनेता समाजसेवा एवं विकास के भाव से राजनीति में आये। उनके अपने कुछ शाश्वत नैतिक मूल्य थे, उसमें गिरावट यदा–कदा ही परिलक्षित होती थी। परन्तु अब राजनीति धर्म, जाति में बंट गई है। जातिगत पार्टियों का उदय हुआ जिसने समाज को एक सूत्र में पिरोने की मुख्य धारा को मोड़ कर उसमें बंटवारा करना शुरू कर दिया। उसने येन–केन– प्रकारेण सत्ता हासिल करने की प्रवृत्ति जागृत हो गयी, इसने समाज को बांटना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि कभी कभी इस पर अंकुश भी लगता है, परन्तु पुनः यह हवा पाकर जागृत हो जाता है। इन जातिगत पार्टियों में इस बात की होड़ नहीं है कि उनके समाज से कितने विद्वान, लेखक, वैज्ञानिक, डाक्टर, इंजीनियर पैदा हों, वरन एक मात्र उद्देश्य सत्ता प्राप्ति एवं सरकारी नौकरियों में आरक्षण हो गया है। सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न व्यवस्थाओं के बाद आरक्षण 60 प्रतिशत तक सीमित हो गया है,

परन्तु अभी भी आरक्षण का मुद्दा इस देश में पूरी तरह शांत नहीं हो पाया है। कुछ जातियां अन्य पिछड़ा वर्ग में आना चाहती है तो कुछ अनुसूचित जाति/ जनजाति में। अब पिछड़े वर्ग में भी अति पिछड़ा व अत्यन्त पिछड़ा की बात छिड़ गई है। इसको लेकर कई बार खूनी संघर्ष भी देखने को मिल रहा है, लोक सम्पत्तियों को क्षति पहुंचाना तो आम बात हो गयी है। कोई भी शासन तंत्र कड़ी कार्यवाही करने से यथासंभव परहेज करता है, ताकि उसका वोट बैंक न बिगड़ जाय। साम्प्रदायिकता का भाव स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के दिनों में धीरे–धीरे समाप्ति की ओर अग्रसर होता प्रतीत हो रहा था, वह भी नब्बे के दशक के बाद बढ़ता जा रहा है। धर्म से जुड़े चिन्हों, वेशभूषा को प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। अब तो हर नेता एवं हर पार्टी की हर बात सर्वस्वीकार्य न होकर चुनौती दी जाती है, चाहे वह कितनी भी देश हित में क्यों न हो। राष्ट्र चेतना विकसित करने के बजाय हम प्रगतिशील यथा स्थितिवादी, उग्र धर्मवाद आदि विभिन्न चेतना के खण्डों में विभाजित होते नजर आ रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यूरोप व अमेरिका के देशों की भांति जो एक वैज्ञानिक सोच व चेतना का पुर्नजागरण इस देश में होना चाहिए था, वह कालांतर में धर्म एवं जाति के चेतना में विकसित होता जा रहा है। दुख तो तब होता है जब हमारे पढ़े लिखे बुद्धिजीवी नेता भी इसी तर्क पर राजनीति करने लगते हैं, ताकि सत्ता की भागीदारी में वे भी अपना अंश प्राप्त कर सके।

इन सब अस्त व्यस्त व्यवस्थाओं के बीच भी देश प्रगति कर रहा है। ग्रामीण जीवन व शहरी जीवन दोनों ही जगह जीवन शैली, सुविधा, संसाधनों में काफी परिवर्तन एवं विकास हुआ है। परन्तु यह परिवर्तन और प्रेरक, प्रेरणादायी एवं

उत्पादक होता यदि इसकी नींव में भ्रष्टाचार, स्वेच्छाचारिता, स्वच्छन्दता न होकर नेक नियति, ईमानदारी, सेवाभाव, उच्च सामाजिक मूल्यों का समावेश होता। यह भी सर्वस्वीकार्य है कि भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे चलता है। यदि मंत्री जी को पैसा चाहिए तो इसका असर नीचे के पायदान तक आना ही है, चाहे वह सीधे हो अथवा अप्रत्यक्ष रूप से। किसी भी निर्माण कार्य के शीघ्र खराब होने पर हम तुरंत तुलना करते हैं कि शेरशाह सूरी के जमाने की बनी सड़क आज तक चल रही है, अंग्रेजों का बनाया पुल कितना मजबूत है, मुगल काल एवं अंग्रेजों के जमाने की बनी अमुक इमारत कितने स्थायी है, ताजमहल तो आज ही का बना लगता है आदि–आदि। आज जब ग्राम प्रधान से लेकर विधायक, सांसद व अन्य जन नेता थोड़े ही दिनों की सत्ता में बड़ी गाड़ियों से चलने लगते हैं उनकी जीवन शैली में आमूल चूल परिवर्तन दिखायी देता है तो पुराने लोग यह कहने से नहीं चूकते कि पहले तो बस में विधायक/ सांसदों की सीट आरक्षित हुआ करती थी। सार्वजनिक निर्माण यथा सड़क, भवन, बांध, पुल सभी भ्रष्टाचार से प्रभावित हो रहे हैं। ईश्वर का भय, कानून का भय, आत्म–अनुशासन का भय जैसे समाप्त हो गया है, यही समाज का नैतिक पतन है। इसे रोकने की बजाय इसमें वृद्धि ही की जा रही है। कानून की पकड़ में जो थोड़े से आते हैं वे भी कालान्तर में कुछ न कुछ तकनीकी त्रुटि के कारण संदेह का लाभ प्राप्त कर बरी हो जाते हैं। इस प्रकार हमारी कानूनी व्यवस्था इसे रोकनें में समर्थ नहीं हो पा रही है। सामाजिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार को जैसे मान्यता प्रदान कर दी हो। हम किसी व्यक्ति द्वारा अवैध रूप से कमाई गयी सम्पत्ति से अमीर बनने पर तिरस्कार भाव से नहीं बल्कि अपने बीच आने पर सम्मान के भाव से देखते हैं, उसका महिमा मण्डन करते हैं, क्योंकि वह हमारे जाति या धर्म का है,

हमारे अपनों के बीच का है। पाप पुण्य की बात, ईश्वर का भय, अगले जन्म में दण्ड का भय यह सब इसलिए समाप्त होता जा रहा है, क्योंकि इसका तात्कालिक प्रभाव मानव जीवन में कम दिखाई देता है और अगले जन्म की देखने की हममें क्षमता नहीं है। नारकीय जीवन व्यतीत कर रहे प्राणियों के पिछले जन्म को देख पाने की विधा बहुत थोड़े से सिद्ध पुरूषों के पास है। यह विद्या बहुत कठिन है और जन सामान्य के वश की नहीं है।

हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था ऐसी नहीं है कि बच्चों में राष्ट्र चेतना भी जागृत कर सकें। वह अधिकांशतया डिग्री परक व रोजगार परक है। आजकल तो उच्च डिग्री भी प्राप्त करना आसान हो गया है। गिरावट का स्तर यहां तक पहुंच गया है कि पी0एच0डी0 की डिग्री भी मैनेज हो जाती है। "गूगल" गुरू की मदद से "कट एण्ड पेस्ट" तो सामान्य बात है। हाईस्कूल, इण्टर, बी0ए0, एम0ए0 आदि की डिग्री तो मात्र समय व धन की बात है, श्रम का सीधा सम्बन्ध नहीं रह गया है। ऐसा युवक जब समाज में उत्पादकता के जीवन स्तर में प्रवेश करता है तो उससे कैसे एक अनुशासनप्रिय, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, राष्ट्रप्रेमी नागरिक की कल्पना की जाये, चाहे वह नेता, मंत्री, सरकारी कर्मचारी अधिकारी, कर्मचारी, व्यापारी या अन्य किसी स्थान पर ही क्यों न हो। मेरे विचार से शिक्षा को राष्ट्र स्तर पर एकरूपता देने एवं कुछ मूलभूत शाश्वत मूल्यों को बच्चों में बचपन से ही स्थापित करने की आवश्यकता है। हाईस्कूल व इण्टर की पढ़ाई के दौरान उनके कौशल विकास किया जाना एवं वैज्ञानिक सोच, उद्यमिता व चेतना विकसित किया जाना आवश्यक है, ताकि जो उच्च स्तर की पढ़ाई के योग्य नहीं है, अथवा उनकी अभिरूचि नहीं है तो भी वे राष्ट्र के एक जागरूक, उत्पादक व जिम्मेदार अनुशासनप्रिय नागरिक

बन सकें, न कि एक स्वच्छन्द, अनुपयोगी, उच्छृंखल नागरिक। धार्मिक शिक्षा में भी राष्ट्रप्रेम से सम्बन्धित एवं समाज उपयोगी इन शाश्वत मूलभूत मूल्यों को पढ़ना अनिवार्य होना चाहिए।

जिस प्रकार विश्व भर में खान पान की ऐसी कोई सुनिश्चित पद्धति/विधि विकसित नहीं है जिसे अपनाने पर व्यक्ति एक लम्बी जिन्दगी बिना किसी रोग के जी सकता है, उसी प्रकार समाज में बच्चों को पालने की कोई सुनिश्चित पद्धति/विधि नहीं है जिससे सभी बच्चे बड़े होकर एक अनुशासनप्रिय, राष्ट्रप्रेमी, कर्तव्यनिष्ठ आदर्श नागरिक बन सके। हर समाज में अच्छे बुरे इंसान हैं, परन्तु राष्ट्र का यह कर्तव्य होना चाहिए कि बुरे इंसान कम से कम लोग बनें। जन्मजात गुणों की बात छोड़ दें तो मेरा मानना है कि सतत् प्रयास से हम राष्ट्र में जिम्मेदार व अच्छे विचारों के इंसान को बना सकते हैं इसका सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा होगी। जिस प्रकार देश स्वतंत्र होने के बाद संविधान सभा के लम्बे मंथन, विचार विमर्श के उपरान्त हमारा संविधान बना, उसी प्रकार सभी राजनैतिक दलों के लोगो को सर्वमान्य एवं सार्वभौमिक दीर्घ अवधि की शिक्षा प्रणाली विकसित कर उसे लागू करना चाहिए। यह शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक विधि पर आधारित हो जिसमें धार्मिक अंश उतना ही समाविष्ट हो जिससे उनमें विवेकशीलता उत्पन्न हो सके, अच्छे संस्कार पनप सकें, गलत कार्यों के प्रति विरोध भाव हो, दूसरे के शोषण की प्रवृत्ति न हो, समावेशी हो, एक दूसरे के धर्मों की अच्छाइयों को भी समझें, राष्ट्र प्रेम जागृत हो। यह आज निर्विवाद है कि बिना विज्ञान एवं तकनीकी विकास के कोई देश/ समाज दुनिया में अपना स्थान नहीं बना सकता। वह हमेशा दूसरे देश पर निर्भर रहेगा चाहें तोप, विमान, मिसाइल, बम या अन्य युद्ध के तथा देश रक्षा के

उपाय हों अथवा जीवन रक्षक प्रणाली के विभिन्न मेडिकल उपकरण, कम्प्यूटर, मोबाइल, यातायात के साधन, घरेलू उपभोग की वस्तुएं आदि। जापान, दक्षिण कोरिया, इजरायल जैसे छोटे – छोटे राष्ट्रों में भी अपने यहां रिसर्च एवं डेवलपमेन्ट पर अपनी जी0डी0पी0 का अच्छा खासा हिस्सा व्यय कर रोज–नित नये – नये खोज/ आविष्कार कर रहे हैं। दूसरी तरफ हम जाति, धर्म के झगड़ों में और उलझते जा रहे हैं। यह भी कैसी विडम्बना है कि हजारों वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध इस धरती पर हुआ जिसे भगवान कृष्ण भी नहीं रोक सके और आज इक्कसवीं सदी में भी हम अयोध्या में 130 ×80 वर्ग फुट के एक जमीन के टुकड़े का विवाद 1949 से आज तक हल नहीं कर पा रहे हैं।

देश के मूलभूत संरचनाओं एवं संसाधनों के निर्माण में लगे ठेकेदारों, अधिकारियों एवं मंत्रियों जन प्रतिनिधियों पर भी बड़े अंकुश व नियम होने चाहिए। हर निर्माण के पूर्व उनकी सम्पत्ति की घोषणा ली जाय और निर्माण के बाद उनके सम्पत्तियों की जांच। एक अनुमन्य सीमा से अधिक की सम्पत्ति अर्जित करने पर सम्पत्ति जब्त हो और उसे समाज को समर्पित कर दिया जाय। उनके विरूद्ध उचित कानूनी कार्यवाही की जाय।

समाज में बढ़ती स्वच्छंदता, उच्छृंखलता भविष्य में जातिगत, आर्थिक उन्मादों को बढ़ावा देगी और आंतरिक अशान्ति भयंकर हो सकती है। यद्यपि पुलिस, पैरामिलिटरी फोर्स व अन्त में सेना इसे येन–केन–प्रकारेण नियंत्रित करेगी, परन्तु तब तक देश का काफी नुकसान हो चुका होगा। अतः हमें अभी से अपने देश के भविष्य के लिए उपाय करने होगें चाहे भले ही कुछ कठोर कदम उठाने पड़ें। परन्तु यदि सभी दल राष्ट्र हित के शिक्षा की एक दीर्घकालीन नीति बनाकर और

आवश्यकता होने पर संविधान में संशोधन पर कानूनी प्राविधान बना देगें तो यह सम्भव है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हर क्रिया के समान एवं विपरीत प्रतिक्रिया होती है। सामाजिक परिवर्तनों के दृष्टिकोण में यह तात्कालिक रूप से विपरीत प्रभाव दिखाना शुरू कर देती है परन्तु समान भले ही न हो। धीरे–धीरे यह समान होने की दिशा में अग्रसर होती है। पूर्णतः विपरीत भेदभाव (reverse descrimination) तो और भी खराब होगा। अतः हर सामाजिक परिवर्तन का प्रयास एक दीर्घगामी सोची समझी रणनीति बनाकर एवं सभी को सर्वसम्मति से समाहित कर होना चाहिए। तात्कालिक रूप से कुछ असंतुष्ट तत्व उभर सकते हैं, उन्हें समझाया/ नियंत्रित किया जा सकता है।

अगर पूर्व की एवं आज की सामाजिक, आर्थिक दशा पर दृष्टि डाली जाय तो ग्रामीण व शहरी दोनों ही जगह भौतिक प्रगति उल्लेखनीय मिलेगी। 125 करोड़ की आबादी के इस देश में अन्न की अब कोई कमी नहीं है, पर्याप्त भण्डार भी है। इसके लिए निश्चय ही किसान एवं कृषि वैज्ञानिक साधुवाद के पात्र है। लोगों के शरीर पर वस्त्र अब पर्याप्त दिखायी देता है जो पचास–साठ के दशक में नहीं था। डाक्टर व स्वास्थ्य सेवाएं भी सर्वसुलभ होती जा रही है। रहन–सहन का स्तर भी बढ़ा है। झोपड़ियां पक्के घरों में एवं कच्चे मकान बड़े पक्के मकानों में परिवर्तित हो रहे हैं। शहरों में "मॉल कल्चर" एवं "फ्लैट कल्चर" विकसित हो रहे हैं। आवागमन के साधन यथा हवाई यात्रा, अच्छे, आरामदेह एवं विश्वसनीय चार पहिया वाहन, ट्रेनों में ए0सी0 डिब्बे अब हमारे जीवन में शामिल हो चुके हैं। खान पान की शैली पारम्परिक भोजन से नूडल्स, पिज्जा, बर्गर एवं फास्ट फूड में बदलता

जा रहा है। दुनिया के किसी कोने में विकास का मॉडल अब बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से हमारे यहा भी देर सबेर स्थान पा रही है। परन्तु एक आम आदमी की खुशी उसके चेहरे पर नजर नहीं आती, जबकि हमने अमेरिका में यह एक खास परिवर्तन पाया था। वहां एक आम आदमी हमसे कम संसाधनों के बाद भी अधिक प्रसन्न, चिंता मुक्त, अनुशासनप्रिय, विनम्र, विश्वासी नजर आता है। सामान्यतया कोध एवं व्यग्रता नजर नहीं आयी। विश्वविद्यालय एवं मेट्रो में अनावश्यक वार्तालाप के बजाय लोग अपने–अपने अध्ययन/ कार्य में व्यस्त नजर आये। अनावश्यक वाहनों के हार्न का शोर, लाउडस्पीकर का शोर अथवा सड़क पर जाम जैसी स्थिति नजर नहीं आयी। यहां गले में खिचखिच वहां के वातावरण में अपने आप दूर होती नजर आयी। वायु प्रदूषण महसूस नहीं हुआ। ये सब अनेक क्षेत्र हैं, जहां हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को संदेश देना है, यह तभी सम्भव है जब हम एक दीर्घगामी रणनीति बनाकर कार्य करे एवं तात्कालिक सत्ता प्राप्ति के लिए विघटनकारी बातों, कार्यों, प्रलोभनों से बचें। मनुष्य जीवन नश्वर है, अमरता तो अच्छे व नेक कार्यों से ही आती है। आवश्यकता से अधिक, धन का संचय भविष्य में सरदर्द ही साबित होता है। आखिर में यह बढ़ते शुगर, ब्लड प्रेसर, मानसिक तनाव की बीमारियों एवं अन्य बीमारियों को भी निमंत्रण देता है। अतः आवश्यकता है कि हम अपने जीवन में थोड़ा आध्यात्मिक मूल को स्थापित करते हुए शांत, आनन्दमय, सुखमय दीर्घ जीवन व्यतीत करें।

–क्रमशः

– अध्यक्ष/प्रबंधक न्यासी सदस्य
अज्ञानाश्रम ट्रस्ट